साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

पुस्तक समीक्षा-
कुमाउनी युवती की सांस्कृतिक कथाः 'मिस पिथौरगढ़-जिंदाबाद!'

डा. बंदना चंद

'मिस पिथौरगढ़-जिंदाबाद!' युवा रचनाकार पवनेश ठकुराठी 'पवन' द्वारा लिखित नाटक है। इस नाटक में कुल चार अंक हैं। यह नाटक मूल रूप से प्रेमा नामक एक कुमाउनी युवती के अपनी संस्कृति की ओर वापस लौटने की कथा है। नाटक का प्रारंभ विद्यालय के दृश्य से हुआ है और समापन प्रेमा के आदर्श विचारों के साथ। मूल कथा प्रेमा की है जो मिस पिथौरगढ़ नामक सौंदर्य प्रतियोगिता में भाग लेती है और उस

प्रतियोगिता की विजेता बनती है। यहां से उसे एक फिल्म में काम करने का मौका मिलता है, किंतु फिल्म के डायरेक्टर के आपत्तिजनक प्रस्ताव से वह आहत हो जाती है और वापस अपने गांव लौट आती है। प्रेमा परू नामक युवक से प्रेम करती है। दोनों के मध्य वार्तालाप के अनेक दृश्य नाटक में मौजूद हैं-

"परू- मिस पिथौरगढ़! तो कि छु? के नौकरी छु या क्वे डिग्री छु?

प्रेमा- ना नौकरि छु, ना डिग्री छु।

परू- पैं कि छु?

प्रेमा- एक प्रतियोगिता छु। जो अघिल साल फरवरी में आयोजित हुणीं वालि छु।

परू- अच्छ्या। ये प्रतियोगिता में कि हुंछ? म्यर मतलब कसिकै चयन हुंछ और को ये प्रतियोगिता में भाग ल्ही सकनीं।

प्रेमा- ये प्रतियोगिता में पिथौरगढ़ जिलाक उन सब छ्योड़ि भाग ल्ही सकनी, जनरि उमर अठार साल बै छब्बीस बरस तककि छु। प्रतियोगिता में शामिल जो सबहैं सुंदर भलि-बान छ्योड़ि होलि उकें मिस पिथौरगढ़क ताज मिलल।"

'मिस पिथौरगढ़-जिंदाबाद!' एक सांस्कृतिक नाटक है। यही कारण है कि इस नाटक में कुमाउनी समाज से जुड़े तमाम सांस्कृतिक दृश्य मौजूद हैं। नाटककार ने पुरानी और नई पीढ़ी के बीच के वार्तालाप दृश्यों के माध्यम से कुमाउनी समाज में आये सांस्कृतिक बदलावों का भी बखूबी चित्रण किया है-

“आमा- प्रेमा! ओ प्रेमा! (अचानक आमाकि नजर प्रेमा पर पड़ें। आमा हक्क रै जांछि) ओ इजा! परूलि, मेरि नातणी तौ कि पैरि राखौ त्वील तस किसमक!

(आमा दौड़नी वीक नजिक ऊँछि)

प्रेमा- आमा! यो ड्रस छु। अच्छ्यालून योई फैशन चलि रौ।

आमा- ढुङ में रैजौ तौ फैशन। दिखा धैं (पैजाम कें देखते हुए) यो देख! फाटीनाक पैजाम पैरि राखौ त्वील।

प्रेमा (नाराज होते हुए)- आमा, यो फाटीनाक न्हांथिन। यो फैशन छु।

आमा (हाथ जोड़ते हुए)- हे परमेशरा! कि हैगो ये जमान कें? कि हैगो मेरि नातणि कें। फाटीनाक कापड़ान कें फैशन बतूंण लागिरै।

प्रेमा (गुस्सा होते हुए)- आमा! बकबास नि कर। जा आपन कम्र में जा।“

सांस्कृतिक बदलावों के अलावा इस नाटक में पर्वतीय ग्रामीण परिवेश में व्याप्त शराब, नशा, जुआखोरी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पारिवारिक कलह आदि बुराइयों के अलावा शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं भी उजागर हुई हैं। नाटक हास्य-व्यंग्य शैली में लिखा गया है। गुपाल और नैनू शराबियों से जुड़े प्रसंग अत्यंत हास्यपूर्ण बन पड़े हैं-

“पैंल शराबि- हमार कूंना मतलब छ कि सरकारल टैम-टैम पर शराबियों लिजी आफर ले निकालन चैंनी। जसिकै मोबाइल कंपनी वाल नब्बे में नब्बे क फुल टाकटाइम या ढेड़ सौ क रिचार्ज पर द्वी सौ क टाकटाइम निकालनीं। अरे यार देखना नै बजारपन? अच्छ्यालून समान बेचणीं वालि कंपनी ले तमाम आफर ग्राहकों कें दिछीन। जसिकै एक सैम्पू दगड़

दुसर सैम्पू फ्री। एक साबुनक दगड़ दुसर साबुन फ्री। उसीकैं सरकार कें ले कभतै-कभतै एक शराबकि बोतलक दगड़ दुसरि शराबकि बोतल फ्री दिंण चैं या रेट में पचास परसेंट डिस्काउंट दिण चैं। अरे रोज नै कभतै-कभतै। जसिकै होलि-दिवालि त्यार-ब्यारोंक टैम में।“

नाटक के अंतिम दृश्य में प्रेमा का कथन पर्वतीय युवती के महान आदर्श को दर्शाता है-“पहाड़कि चेलि छु मिं। यांक चेलि आपणि इज्जतकि रक्षा करन आपण सबहें ठुल कर्तव्य समझछींन।“

’मिस पिथौरगढ़-जिंदाबाद!’ नाटक में प्रमुख रूप से छह नारी पात्र और एक दर्जन पुरूष पात्र हैं। नाटक रंगमंच की दृष्टि से उपयोगी है। आशा व्यक्त की जा सकती है कि युवा रचनाकार पवनेश ठकुराठी ’पवन’ द्‌वारा लिखित यह नाटक कुमाउनी नाटकों के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगा।

-डा. बंदना चंद

तिलढुकरी, पिथौरागढ़

उत्तराखण्ड-262501

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें